गेहूँ की फसल में लगने वाले मुख्य कीट तथा उनका प्रबंधन

दिनेश चौधरी, निधि कम्बोज एवं आर. एस. छोकर
भाकृअनुप– भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल (हरियाणा)
*संवादी लेखक का ई–मेलः dineshagmjrp@gmail.com

गेहूँ भारत देश की मुख्य खाद्यान्न फसल है। इस फसल के द्वारा कई विकसित देशों में रहने वाले निम्न और मध्यम आय वाले लोगों के भोजन की पूर्ति होती है। गेहूँ की फसल में कीटों, रोगों व सूत्रकृमियों के द्वारा 5–10 प्रतिशत तक उपज में हानि होती है। इससे गेहूँ के दानों की गुणवत्ता में अधिक गिरावट आ जाती हैं। विभिन्न प्रकार के कीटों के द्वारा फसलों को उगाने से लेकर पकने तक तथा कटाई के बाद भंडारग्रहों में भी नुकसान पहुँचता हैं। गेहूँ की फसल में मुख्य रूप से दीमक, सैनिक कीट, कटन कीट, माहू तथा तना मक्खी आदि कीटों का प्रकोप अधिक होता है। देश की बढ़ती हुई जनसंख्या के आधार पर खाद्यान्न कि पूर्ति के लिए कीटों के द्वारा होने वाली क्षति को कम करना अति आवश्यक है। अगर कीटों का समय पर नियंत्रण नही किया गया तो यह कीट खाद्यान्न आपुर्ति में बाधक बन सकते है। इन कीटों के नियंत्रण के लिए ऐसी तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए जिससे अधिक उत्पादन के साथ–साथ उत्पादन लागत भी कम हो एवं मानव स्वास्थ्य के लिए भी सुरक्षित हो। जहाँ तक संभव हो इन कीटों का भंक्षण जैविक कीटों के द्वारा तथा गर्मियों (मई–जून) के महीने में गहरी जुताई करके खेत को खुला छोड़ कर करना चाहिए। इससे लागत में भी कमी आएगी तथा कीटों का नियंत्रण भी लम्बे समय के लिए हो सकेगा।

गेहूँ कि फसल के मुख्य हानिकारक कीट

1. दीमक

दीमक छोटे–छोटे कीट है। गेहूँ की फसल में इसका प्रकोप अधिक होता है। इसके प्रकोप से गेहूँ के अंकुरित 25 प्रतिशत पौधे नष्ट हो जाते है। दीमक ज़मीन में सुंरग बनाकर रहती हैं यह मुख्य रूप से असिंचित व हल्की भूमि में अधिक नुकसान पहुंचाती है। दीमक का रंग हल्का भुरा होता है। दीमक अपना प्रभाव जड़ से तने की ओर करती है। पहले यह जड़ को नष्ट करके पौधे को सूखा देती है तथा फिर उसके तने को नष्ट कर देती है। एक दीमक रानी एक दिन में 40,000 अंडे दे सकती है। यह अधिकतर फसल अवशेष तथा बिना सड़ी गोबर की खाद से प्रभावित होती है।

प्रबंधन

1. गोबर की अच्छी तरह से विघटित खाद का उपयोग करना चाहिए।
2. बीजों को बुवाई से पूर्व इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यू.एस. 0.1 प्रतिशत से उपचारित करके बुवाई करनी चाहिए।
3. दीमक का प्रकोप होने पर नीम या करेले के रस का छिड़काव करना चाहिए। जिससे वातावरण में कड़वी महक से भी दीमक धीरे–धीरे समाप्त हो जाती है।
4. खेत से फसल अवशेषों को नष्ट देना चाहिए।
5. परभक्षी का उपयोग करना चाहिए।

2. सैनिक कीट

इस कीट की सूंड़ी गेहूँ की फसल को अधिक नुकसान पहुँचाती है। इस कीट के अण्डों से निकलने वाली सुण्डी हवा

के प्रकोप से एक पौधे से दुसरे पौधे में पहुँच जाती हैं। इस सूण्डी का प्रभाव सर्वाधिक फरवरी–मार्च के महीने में दिखाई देता है। इसकी नवजात सुण्ड़ी बहुत अधिक गतिशील होती है। इसके कीट का रंग भूरा होता है।

इसकी सूण्डी सबसे पहले पौधे की कोमल पत्तियों को खाती है तथा धीरे–धीरे पौधे की पुरानी पत्तियों को भी नष्ट कर देती है। इस सुण्ड़ी के आक्रमण से पौधे का आकार कंकाल जैसा हो जाता है।

प्रंबधन

1. गर्मियों (मई –जून) के दिनों में गहरी जुताई।
2. खेतों के आस–पास किसी भी प्रकार का खरपतवार हो उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
3. फसल अवशेषों को जलाकर नष्ट कर देना चाहिए।
4. कीटों का अधिक प्रकोप होने पर क्विनॉलफॉस 25 ई. सी. 1 लीटर मात्रा को 700 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेर छिड़काव करना चाहिए।
5. जैविक नियंत्रण एजेंटों का उपयोग करना चाहिए।

3. माहू

यह कीट आकार में छोटा होता है। यह पौधों का रस चुसने का कार्य करता है। यह कीट भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में पाया जाता है। इस कीट को हरी मक्खी के नाम से भी जाना जाता है। इसका प्रकोप जनवरी से मार्च तक अधिक होता है। इस कीट का रूप पंखहीन तथा पंखवाला दोनों अवस्था में पाया जाता है। इस कीट के द्वारा पौधे की वृद्धि को अत्यधिक मात्रा में हानि होती है।

प्रंबधन

1. इस कीट का आक्रमण दिखाई देने पर शुरूआती अवस्था में ही पौधे को उखाड़ कर उसे नष्ट कर देना चाहिए।
2. आक्रमण अधिक होने पर बी.टी. 1 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।
3. नीम का रस या नीम का तेल 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
4. गेहूँ की फसल में नत्रजन उर्वरकों का उपयोग पौधे की आवश्यकता अनुसार ही करना चाहिए।
5. जैसे ही कीट का प्रकोप दिखाई देने लगे पीले चिपचिपे ट्रैप का प्रयोग करें जिससे माहू ट्रैप पर चिपक कर मर जाये।

4. गुलाबी तना (बेधक)

इस कीट का प्रकोप पूरे भारत में है। यह अपना प्रभाव रबी के मौसम में दिखाता है। इस कीट का प्रांरभिक चरण फसलों के लिए अत्यधिक हानिकारक है। इसके झांझे सूंडी चिकनी बैलनाकार शरीर के साथ गुलाबी भुरे रंग के होते है। यह पौधे के तनों के अन्दर पहुँच कर उन्हें बीच से खोखला बना देती है तथा इसके कारण पौधा धीरे–धीरे नीचे से सूखता हुआ नष्ट हो जाता है और पुराने पौधे पर सफेद बालियाँ उत्पन्न हो जाती है। यह कीट पत्तियों पर तथा भूमि पर अण्ड़े देता है।

प्रबंधन

1. फसल–चक्र का उपयोग करना चाहिए।
2. संक्रमित पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।

3. फसल में अधिक प्रकोप होने पर क्लॉरपइफास 20 ई.सी. का 40 एम.एल./टंकी (15 लीटर) की दर से छिड़काव करें।
4. गर्मियों (मई–जून) के महीने में गहरी जुताई करके खेत को खुला छोड़ देना चाहिए।

5. तना मक्खी

इस कीट का प्रकोप नवम्बर से मार्च तक अधिक होता है। इसमें मादा मक्खी नर से बड़ी होती है। इसका भुनगा (मेगट) गुलाबी सफेद रंग का होता है। इस कीट का प्रोढ़ घरेलू मक्खी के जैसा दिखाई देता है।

यह कीट पौधे के तने का अन्दर वाला भाग खाकर उसमें सुरंग बना देता है तथा इससे तना कमजोर होकर पौधा पीला पड़ जाता है। इस कीट की मादा मक्खी अण्ड़े पत्तियों के निचले भाग में देती है।

प्रबंधन

1. गेहूँ की फसल की बुआई 15 नवम्बर के बाद करें।

2. फसल–चक्र का उपयोग करना चाहिए।
3. खेत में पानी की मात्रा पर्याप्त रखनी चाहिए।
4. कीट का प्रकोप अधिक होने पर मोनोक्रोटोफास 36 प्रतिशत एस.एल. 650 मि.ली. मात्रा का पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
5. खेत के आस–पास खरपतवार जैसे पौधों को नष्ट कर देना चाहिए।

भारतवर्ष के लिए हिंदी भाषा ही सर्वसाधारण की भाषा होने के उपयुक्त है।

– शारदाचरण मित्र